

रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 14

उत्पत्ति 4-5 - कैन और हाबिल

1. हाबिल की मृत्यु

आइए उत्पत्ति 4 और 5 पर चलते हैं। 1. आपकी शीट पर है: "हाबिल की मृत्यु।" उत्पत्ति 4 में हाबिल की मृत्यु के बारे में ध्यान देने योग्य कुछ बातें। पहला, पहली मृत्यु हत्या से होती है। भगवान ने कहा था, "जैसे तुम पेड़ का फल खाओगे वैसे ही मरोगे," और निश्चित रूप से ऐसा होता है और वह पूरा हुआ, लेकिन हम पाते हैं कि पहली मृत्यु, वास्तविक मृत्यु, प्राकृतिक नहीं थी। यह हत्या थी, और केवल हत्या ही नहीं, बल्कि यह एक भाई की हत्या थी। इसे और भी बदतर बनाने वाली बात यह है कि यह घृणा के कारण हुआ क्योंकि हाबिल की भेंट ईश्वर ने स्वीकार कर ली थी और कैन की नहीं। इसी वजह से उसने अपने भाई की हत्या कर दी। तो पहली मौत उत्पत्ति अध्याय चार में, शुरुआती छंदों में, हत्या से होती है।

2. कैन और हाबिल की भेंट

हाबिल की मृत्यु के तहत दूसरी बात बलिदानों के लिए लाए गए चढ़ावे का प्रश्न है, और यह प्रश्न कि भगवान ने हाबिल को क्यों स्वीकार किया और कैन को स्वीकार नहीं किया। मुझे यकीन नहीं है कि हम इसका पूरी तरह से उत्तर दे सकते हैं, लेकिन पद 4 में आपके पास यह कथन है, "हाबिल अपनी भेड़-बकरियों के पहिलौठों और उसकी चर्बी को ले आया, और यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट का तो आदर किया, परन्तु उसने कैन और उसकी भेंट का आदर न किया, और कैन बहुत क्रोधित हुआ, और उसका मुख उतर गया। और यहोवा ने कैन से कहा, तू क्रोध क्यों करता है; तुम्हारा मुख क्यों गिरा हुआ है?" फिर श्लोक 7, जो कि कठिन श्लोक है, कहता है, "यदि तुम अच्छा करो, तो क्या तुम्हें स्वीकार न किया जाएगा? और यदि तू अच्छा न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहेगा, और तू उसकी अभिलाषा होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।" मुझे लगता है कि श्लोक 7 का तात्पर्य है कि भेंट लाने में रवैया महत्वपूर्ण चीज है। "यदि तुम अच्छा करो, तो क्या तुम्हें भी स्वीकार न किया जाएगा?"

यदि आप इब्रानियों 11:4 में पढ़ते हैं तो यह वह कथन है जो अक्सर इस प्रश्न से संबंधित होता

है, क्यों एक को स्वीकार किया गया और दूसरे को अस्वीकार किया गया, "विश्वास ही से हाबिल ने कैन से भी उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया, जिस से उस ने गवाही दी कि वह था।" न्याय परायण।" अब, कई लोगों का मानना है कि दोनों भेंटों के बीच अंतर करने वाली महत्वपूर्ण बात यह नहीं थी कि कैन ज़मीन का फल लाया और हाबिल एक जानवर लाया; यह लाए गए चढ़ावे के प्रकार में अंतर नहीं था, बल्कि अंतर हृदय के स्वभाव में था, और यह *विश्वास के कारण था* कि हाबिल ने अधिक उत्कृष्ट बलिदान चढ़ाया। दूसरा प्रश्न जो यहाँ अक्सर उठाया जाता है वह यह है: हाबिल को इस बारे में कितना पता था कि किस विशिष्ट प्रकार का बलिदान लाया जाना है या यहाँ तक कि बलिदान लाया जाना है? इससे पहले, हमें पाठ में ऐसी कोई जानकारी नहीं है जो हमें बताती हो कि भगवान ने बलिदान के संबंध में कोई निर्देश दिया था। आपको पिछली कक्षा याद है, हमने उत्पत्ति 3:21 में कहा था, जब कोट चमड़े के बने होते थे तो कुछ लोगों को लगता था कि उस समय बलिदान की स्थापना की गई थी, और उसके संबंध में कुछ निर्देश दिए गए थे। यदि ऐसा मामला है, तो यह पाठ में नहीं कहा गया है, इसलिए यह अटकलबाजी बन जाती है। हो सकता है कि वहाँ कुछ रहा हो और हो सकता है कि वहाँ कुछ न भी हो। यदि वहाँ कुछ था, तो संभव है कि हाबिल ने उस निर्देश का पालन किया हो और कैन ने नहीं, लेकिन आप देखते हैं कि वह संपूर्ण निर्माण काफी काल्पनिक है।

कैन की पेशकश पर युद्धक्षेत्र - पियाकुलर बनाम उपहार

बीबी वारफील्ड की एक चर्चा में, जो आपकी ग्रंथ सूची पर है, पृष्ठ 9 पर अंतिम प्रविष्टि के बगल में, "मसीह हमारा बलिदान" नामक एक लेख है - यह "बाइबिल फाउंडेशन" नामक निबंध के इस खंड में पृष्ठ 167-169 में शामिल है। यह पूरा लेख नहीं है, लेकिन जहां वह इस विशेष पाठ पर चर्चा करता है वह कैन और हाबिल की पेशकश की एक दिलचस्प चर्चा है। मुझे यहां बस एक पैराग्राफ पढ़ने दीजिए। यहां उत्पत्ति 4 में क्या चल रहा था, इस पर अपनी टिप्पणियों में, वह कहते हैं, "यह शायद ही पंक्तियों के बीच में बहुत अधिक पढ़ा जा सकता है कि यह मान लिया जाए कि उत्पत्ति के चौथे अध्याय में कथा का उद्देश्य एक तरफ बलिदान की उत्पत्ति का वर्णन करना है।" पूजा और दूसरी ओर बलिदान की दो अवधारणाओं के बीच अंतर करना और दूसरे के बजाय एक

के लिए यहोवा की प्राथमिकता को इंगित करना। ये दो अवधारणाएँ संक्षेप में वे हैं जिन्हें क्रमशः पियाकुलर सिद्धांत और प्रतीकात्मक या उपहार सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। पियाकुलर सिद्धांत पाप के लिए प्रायश्चित की आवश्यकता या प्रायश्चित की आवश्यकता के विचार से संबंधित है, जबकि उपहार सिद्धांत या प्रतीकात्मक काफी कुछ है जैसा कि इसके नाम से पता चलता है: एक उपहार जो भगवान को दिया जाता है। लेकिन पियाकुलर का संबंध इस विचार से है कि ईश्वर के न्याय, पाप के प्रायश्चित में संतुष्टि की आवश्यकता है।" और उनका कहना है कि संभवतः यहां बलिदान की दो अवधारणाएं शामिल हैं। वह कहते हैं, "इस दृष्टिकोण से हमें यह नहीं मानना चाहिए कि कैन और हाबिल ने केवल उस वृद्धि में से जो उसे दी गई थी, प्रभु के लिए एक उपहार लाया, जिससे कि वह यहोवा की अधिपत्यता को स्वीकार कर सके और उसके प्रति अधीनता और आज्ञाकारिता व्यक्त कर सके: और वह यह महज़ एक दुर्घटना है कि कैन की भेंट, एक किसान की तरह, ज़मीन के फल की थी, जबकि हाबिल की, एक चरवाहे की तरह, भेड़-बकरियों के पहले बच्चों की थी। ऐसा कोई स्पष्ट कारण नहीं है कि क्यों यहोवा को गेहूँ के पूले की अपेक्षा मेमने को प्राथमिकता देनी चाहिए। अंतर निश्चित रूप से और गहरा हो गया है, क्योंकि यह 'विश्वास से' था कि हाबिल ने कैन की तुलना में भगवान को एक अधिक उत्कृष्ट बलिदान दिया था, जो यह बताता है कि उसके बलिदान की सर्वोच्च उत्कृष्टता केवल अर्पित की गई वस्तु की प्रकृति में नहीं मांगी जानी चाहिए, लेकिन प्रस्तावक के रवैये में, जो निहित प्रतीत होता है वह यह है कि कैन की भेंट मात्र श्रद्धांजलि का एक कार्य था; हाबिल ने पाप की भावना को मूर्त रूप दिया है, यह हास्यास्पद है, पश्चाताप का कार्य है, सहायता के लिए रोना है, क्षमा के लिए प्रार्थना है। एक शब्द में," और इस प्रश्न पर वारफील्ड की स्थिति का सरल कथन यहां दिया गया है: "एक शब्द में, कैन अपने हाथ में एक भेंट और अपने दिमाग में बलिदान के श्रद्धांजलि सिद्धांत के साथ प्रभु के पास आया। हाबिल अपने हाथ में एक भेंट और अपने दिल में बलिदान के महान सिद्धांत के साथ। और इसी कारण यहोवा ने कैन की भेंट का नहीं, परन्तु हाबिल की भेंट का आदर किया।"

अब उनका समापन कथन है, "यदि ऐसा है, तो हम कह सकते हैं कि बलिदान का आविष्कार मनुष्य द्वारा किया गया था, हमें यह भी कहना होगा कि इस अधिनियम के द्वारा, ईश्वर द्वारा पवित्र बलिदान की स्थापना की गई थी। इसे धारण करने के अन्य तरीकों में, बलिदान मनुष्य

को ईश्वर की ओर पहुँचने का प्रतिनिधित्व कर सकता है; अपनी विचित्र अवधारणा में यह मनुष्य के प्रति ईश्वर के नीचे गिरने का प्रतिनिधित्व करता है। बुनियादी अंतर यह है कि एक मामले में बलिदान पाप की चेतना पर आधारित है और इसका संदर्भ एक दोषी इंसान को निंदा करने वाले भगवान के पक्ष में बहाल करने से है। दूसरे में यह पाप के सभी संबंधों से बाहर है और इसका संदर्भ केवल सम्मान के उचित दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति से है जो एक प्राणी को अपने निर्माता और शासक के प्रति रखना चाहिए।

जनरल 4 के प्रति जॉन मरे का दृष्टिकोण "अधिक उत्कृष्ट बलिदान" अब, यह कुछ हद तक काल्पनिक प्रति-विश्लेषण बन जाता है कि आप जो कह सकते हैं वह यहां उत्पत्ति 4 में हो रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि आप बचे हुए हैं, क्योंकि पाठ सीधे तौर पर नहीं है समस्या का समाधान करें, उस तरीके से समस्या से जूझें। मुझे लगता है कि वारफ़ील्ड के पास एक बहुत ही व्यावहारिक सुझाव है। वे दोनों बलिदानों के साथ आते हैं लेकिन अलग-अलग अवधारणाओं के साथ, और भगवान एक को मंजूरी देते हैं, लेकिन दूसरे को नहीं। वारफ़ील्ड यही कह रहा है, प्रतिबंधों का एक मनोरम दृश्य, जिसे वारफ़ील्ड एबेल की पेशकश का श्रेय देगा।

अब, मुझे लगता है कि मैं वॉरफ़ील्ड के विश्लेषण को काफी हद तक स्वीकार कर लूंगा, लेकिन मैं आपको इसका दूसरा पक्ष बता दूँ। मैंने बाइबिल धर्मशास्त्र पर जॉन मरे के नोट्स का पहले भी कई बार उल्लेख किया है। जब वह इस पाठ पर आता है तो वह कहता है, "ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर की ओर से दृष्टिकोण में अंतर न केवल कैन के दृष्टिकोण के कारण था, बल्कि उस प्रकार की पेशकश के कारण भी था जो वह लाया था," और देखें कि वारफ़ील्ड यही कहता है कहते हैं वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता। वारफ़ील्ड का कहना है कि यह रवैया ही उसकी विशिष्ट विशेषता थी। मरे कहते हैं, ठीक रवैया महत्वपूर्ण है, लेकिन यह पेशकश का प्रकार है। वह कहते हैं, "हमें इस बात की जानकारी है कि भगवान ने पूजा करने के लिए जो आवश्यक था उसे प्रकट किया था, यानी कि उसी सांचे में जिसमें दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है" आप यह तय करने की कोशिश कर रहे हैं कि भगवान ने इसे क्यों स्वीकार किया और दूसरे को अस्वीकार कर दिया और मुझे लगता है कि हमें यह कहना होगा कि पाठ स्वयं कोई उत्तर नहीं देता है। हाँ, यह संभवतः झुंड

के पहले बच्चे थे, जबकि यह नहीं कहता कि यह फल के पहले बच्चे थे। खैर, फिर से, आप उस पर अटकलें लगा सकते हैं। पाठ वास्तव में हमारे लिए इसका उत्तर नहीं देता है।

मुझे क्या प्रतिक्रिया देंगे जब यह कहा जाएगा कि " *विश्वास के द्वारा* उन्होंने एक अधिक उत्कृष्ट बलिदान दिया," मैंने इस बिंदु तक विश्वास पर जोर दिया है। मरे जो करते हैं वह इसे "अधिक उत्कृष्ट बलिदान" पर डालते हैं। वह जो कहता है वह यह है कि "विश्वास से हाबिल ने एक अधिक उत्कृष्ट बलिदान लाया" इस अर्थ में कि यह पिछले निर्देशों के अनुरूप था। अतः यह अपने स्वभाव में एक अधिक उत्कृष्ट बलिदान था। वह यह नहीं कहते कि रवैया महत्वहीन था, लेकिन वह पेशकश के चरित्र पर ही जोर देते हैं। तो, माना कि, इब्रानियों 11:4 के साथ, आप, इस पर निर्भर करते हुए कि आप कहां तनाव डालते हैं, इसे दोनों में से किसी भी दृष्टिकोण के साथ फिट कर सकते हैं। संक्षेप में, मरे जो कहते हैं वह यह प्रतीत होता है कि ईश्वर की ओर से दृष्टिकोण में अंतर न केवल कैन के दृष्टिकोण के कारण था, बल्कि भेंट के प्रकार के कारण भी था। तो यह भेंट का रवैया और प्रकार था, और वह इब्रानियों 11:4 में कहता है, "विश्वास से वह एक अधिक उत्कृष्ट बलिदान लाया," और वह "अधिक उत्कृष्ट" प्रकार की भेंट को समझता है। यह उनके अप्रकाशित व्याख्यान नोट्स में है। "यदि आप अच्छा करते हैं।" दूसरे शब्दों में, यदि आप उचित तरीके से आते हैं। यदि आप उचित दृष्टिकोण के साथ आते हैं, या यदि आप उचित त्याग के साथ आते हैं, तो मुझे लगता है कि आप इसे किसी भी तरह से पढ़ सकते हैं, क्या आपको स्वीकार नहीं किया जाएगा?

उत्पत्ति 4:7 "पाप द्वार पर पड़ा है"

लेकिन श्लोक 7 के साथ आगे बढ़ें और अपनी चर्चा जारी रखें। कैन से कहा गया है, "यदि तुम अच्छा करोगे तो तुम्हें स्वीकार नहीं किया जाएगा, और यदि तुम अच्छा नहीं करोगे, तो पाप तुम्हारे द्वार पर खड़ा है।" अब वहां हिब्रू में शब्द, "पाप", या तो "पाप" या "पापबलि" पढ़ा जा सकता है। यह वही शब्द है। आम तौर पर इसे "पाप दरवाजे पर खड़ा है" के रूप में लिया जाता है। अभिव्यक्ति, "दरवाजे पर लेटना" एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो एक जानवर की तरह दर्शाती है जो झुककर वसंत के लिए तैयार है। तो ऐसा लगता है कि यह पाठ को समझने का सामान्य तरीका है, पाप एक जानवर के रूप में दरवाजे पर पड़ा हुआ है जो पनपने और निगलने, प्रभुत्व करने और

नियंत्रित करने के लिए तैयार है। यदि आप अच्छा प्रदर्शन नहीं करेंगे तो यही होगा। पाप तुम्हें वश में करने वाला है। और फिर वह आखिरी कथन, जिसे हमने आखिरी कक्षा के समय में देखा था, "तुम्हारे लिए उसकी इच्छा पूरी होगी," यानी पाप। पाप की इच्छा आप पर प्रभुत्व स्थापित करने और नियंत्रित करने की है, लेकिन आपको उस पर शासन करना होगा, यह आपका दायित्व है।

अब यदि आप इसे "पापबलि" के अर्थ में लेते हैं, तो आप पढ़ेंगे, "यदि आप अच्छा करते हैं, तो क्या आपको स्वीकार नहीं किया जाएगा, और यदि आप अच्छा नहीं करते हैं, तो एक भेंट है, दरवाजे पर एक मारा हुआ जानवर पड़ा है आपके स्वयं के प्रायश्चित और ईश्वर के साथ मेल-मिलाप के लिए।" एक टिप्पणीकार; एटकिंसन, जो वहां आपकी रूपरेखा शीट पर है, मूडी प्रेस द्वारा प्रकाशित जेनेसिस पर अपनी टिप्पणी में कहते हैं, "भगवान ने कैन के लिए उतना ही प्रदान किया है जितना हाबिल के लिए पाप के लिए प्रायश्चित के लिए। हाबिल ने इसका फायदा उठाया था और कैन ने भी। एक विशिष्ट पाप बलि एक खून बहता हुआ मेमना था, जिसे हाबिल पहले ही ला चुका था। आवश्यक और पर्याप्त पापबलि 'भगवान का मेमना है, जो दुनिया के पापों को दूर ले जाता है।' हाबिल.

लेकिन फिर आप देखते हैं कि इसके लिए अंतिम वाक्यांश की बिल्कुल अलग समझ की आवश्यकता होती है। यदि तुम इसे द्वार पर पापबलि समझते हो—और तुम पर उसकी इच्छा होगी, और तुम उन पर प्रभुता करोगे—तो तुम इससे क्या करोगे? और कविता की समझ के साथ यही समस्या है। उन्होंने कहा, एटकिंसन इसके साथ क्या करता है - आप तक उसकी इच्छाएँ होंगी - कि "उसका" हाबिल को संदर्भित करता है। यदि कैन विश्वास के साथ प्रभु के पास आएगा और अच्छा करेगा, तो उसके और उसके भाई के बीच संबंध सही हो जाएंगे। हाबिल की इच्छा उसके लिए होगी. वह अपने भाई पर पहलौठे के अधिकार के रूप में प्रभुत्व प्राप्त करेगा। "उसकी इच्छा, हाबिल की इच्छा तुम पर पूरी होगी, और तुम उस पर प्रभुता करोगे।" वह अपने भाई पर पहलौठे के अधिकार के रूप में प्रभुत्व प्राप्त करेगा। इसके साथ समस्या यह है कि "उसके" का पूर्ववर्ती स्पष्ट रूप से "पाप" का संदर्भ देता है, जो दरवाजे पर स्थित है, और उस बिंदु पर "हाबिल" डालना वास्तव में कविता की संरचना के साथ प्रवाहित नहीं होता है। इसलिए मुझे लगता है कि सामान्य व्याख्या यह है कि पाप दरवाजे पर है और उस पर काबू पाने और नियंत्रित करने की कोशिश कर

रहा है, लेकिन उसे उस पर शासन करना होगा, यह कविता की सबसे अच्छी समझ है, लेकिन यह एक कठिन कविता है।

उत्पत्ति 4:9 परमेश्वर की प्रतिक्रिया "तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?"

ठीक है, हाबिल की मृत्यु के साथ, आप बाद में भगवान के कार्यों को भी नोटिस करते हैं। पद 9 में, प्रभु कैन से कहते हैं, "तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?" यह बगीचे में पाप के बाद की याद दिलाता है, जहां भगवान आते हैं और सवाल करते हैं। "हाबिल तुम्हारा भाई कहाँ है?" और जैसा कि हमने पहले किया था, टाल-मटोल करने या दोष मढ़ने के बजाय, आपके पास पूरी तरह से इनकार है। उसने कहा, "मैं नहीं जानता, क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?" और उसने कहा, "तुमने क्या किया है? तेरे भाई के खून की आवाज़ ज़मीन पर से मुझे पुकार रही है।" इसलिए वह सीधे अपराध से इनकार करता है। वह कहता है, "मैं नहीं जानता, क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?"

मनुष्य पर पहला अभिशाप - कैन का अभिशाप फिर श्लोक 11 में, मनुष्य पर पहला अभिशाप जहां "अभिशाप" शब्द का वास्तव में उपयोग किया जाता है। वास्तव में यह श्राप और सज़ा के बीच कुछ हद तक कृत्रिम अंतर हो सकता है। परन्तु यहाँ यह कहा गया है, "अब तू उस पृथ्वी की ओर से शापित है जिसने तेरे हाथ से तेरे भाई का लोहू लेने के लिये अपना मुंह खोला है। और जब तुम भूमि पर खेती करोगे तो फिर वह तुम्हें अपनी ताकत न देगी। तू पृथ्वी पर भगोड़ा, आवारा, वा पथिक होगा। सर्प को श्राप मिला था. भूमि शापित थी, और अब कैन शापित है। यह अभिशाप उस अभिशाप का विस्तार और गहनता प्रतीत होता है जो मनुष्य को मिला या आम तौर पर कृषि कार्यों की कठिनाई के साथ मनुष्य को मिलने वाली सज़ा। फसल पैदा करने के लिए भूमि प्राप्त करने में कठिनाई होने के बजाय, कैन के साथ फसल कुछ भी नहीं होगी। यह उसे एक तरह से मेहतर बनने के लिए, अपने भरण-पोषण के लिए जो कुछ भी वह कर सकता है उसे खोजने के लिए इधर-उधर भटकने के लिए मजबूर करेगा। जैसा कि श्लोक 12 में कहा गया है, "जब तुम भूमि पर खेती करो तो वह तुम्हें अपनी ताकत नहीं देगी। इसी प्रकार तू जीवन भर भगोड़ा और भटकता रहेगा। ठीक है, हाबिल की मृत्यु पर कोई प्रश्न?

2. एंटीडिलुवियन प्रौद्योगिकी

चलिए नंबर 2 पर चलते हैं, जो है: "एंटीडिलुवियन तकनीक।" दूसरे शब्दों में, बाढ़-पूर्व प्रौद्योगिकी। हम यह भी पाते हैं कि अध्याय 4 में, श्लोक 16 से शुरू होकर, "कैन प्रभु की उपस्थिति से बाहर चला गया और अदन के पूर्व में नोड की भूमि में रहने लगा। कैन अपनी पत्नी को जानता था; वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्म दिया। उसने एक शहर बसाया।" तो श्लोक 17 में आपके पास शहर की इमारत का संदर्भ है। उन्होंने इसका नाम अपने बेटे हनोक के नाम पर रखा।

आइए आयत 14 और 15 पढ़ें, "देख, आज तू ने मुझे पृथ्वी पर से निकाल दिया है, और मैं तेरे साम्हने से छिपा रहूंगा, और पृथ्वी पर भगोड़ा और भटकता रहूंगा। ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पायेगा वह मुझे मार डालेगा।"

कैन को उसकी पत्नी कहाँ से मिली? और निश्चित रूप से इसके संबंध में यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है, "यदि केवल आदम और हव्वा तथा हाबिल ही जीवित होते तो संभवतः वह कौन होता?" वैसे मुझे लगता है कि स्वाभाविक धारणा यह है कि आदम और हव्वा के अन्य बच्चे भी रहे होंगे और उनका उल्लेख पवित्रशास्त्र में नहीं है। श्लोक 16 में प्रश्न तीव्र है क्योंकि 16 और 17 में हम पढ़ते हैं, "कैन अपनी पत्नी को जानता था; वह गर्भवती हुई और हनोक को जन्म दिया।" उसे अपनी पत्नी कहाँ से मिली? खैर, फिर से, यह आदम और हव्वा के अन्य वंशजों में से रहा होगा। निःसंदेह, यह कहता है, यदि आप अध्याय 5 पर जाएं, तो पद 3 देखें, "आदम 130 वर्ष जीवित रहा, और उसने अपने ही स्वरूप के अनुसार शेत नामक एक पुत्र को जन्म दिया।" हम जानते हैं कि 130 साल की उम्र में, सेठ का जन्म आदम और हव्वा से हुआ था, लेकिन, देखिए, हम इस सवाल पर वापस आते हैं कि पतन और सेठ के जन्म के बीच कितना समय था? शायद 100 साल हो गए होंगे. और भी बहुत सारे बच्चे रहे होंगे। क्या आप जानते हैं कि सौ वर्षों में कई पीढ़ियाँ हो सकती हैं? 100 वर्षों में आपकी 5 पीढ़ियाँ हो सकती हैं। दूसरे शब्दों में, यदि आदम और हव्वा के अन्य बेटे और बेटियाँ होतीं, और वे आपस में विवाह करते, और उनके बच्चे होते, तो आप 100 वर्षों में आसानी से 5 पीढ़ियाँ पैदा कर सकते थे। इसलिए एक जोड़े की संतानों से 100 वर्षों में गुणन की संभावना बहुत

अधिक है। अब निःसंदेह इसके अलावा हमने पढ़ा कि एडम 800 वर्ष तक जीवित रहा था? इस प्रकार वह कुल मिलाकर 930 वर्ष जीवित रहे। लेकिन मुझे लगता है कि हम जिस चीज से निपट रहे हैं वह इस समय सेठ के जन्म से पहले की है, और मुझे लगता है कि हमें यह मान लेना चाहिए कि आदम और हव्वा से अन्य बच्चे पैदा हुए थे, और उन बच्चों ने बदले में अन्य बच्चे पैदा किए होंगे। सेठ के जन्म और हम यहां जिस बारे में बात कर रहे हैं, उसके बीच कई पीढ़ियां रही होंगी।

मृत्युदंड अपराध और मृत्युदंड बी उत्पत्ति 9 में यह कहा गया है कि, "यदि कोई मनुष्य का खून लेता है, तो मनुष्य द्वारा, उसका खून बहाया जाएगा" - खून का बदला। लेकिन मुझे लगता है कि भगवान कानून और सरकार के विचार को निर्धारित कर रहे हैं जिसमें यह एक बड़ा अपराध है जिसे विवेकपूर्ण तरीके से निपटाया जाएगा। उससे पहले, मुझे लगता है कि मानव जाति का स्वाभाविक झुकाव - सभी मानव स्वभाव में - बदला लेना है। तुम यह मेरे साथ करो; मैं इसे आपके पास वापस करने जा रहा हूं, और मुझे लगता है कि कैन इसी से डरता था, और मुझे लगता है कि प्रभु ने उसे उससे बचाया, जिसका उत्तर देना कठिन है, क्योंकि पवित्रशास्त्र इसका उल्लेख नहीं करता है। परमेश्वर ने मृत्युदंड देने के लिए उत्पत्ति 9 तक प्रतीक्षा की, उसने यहाँ ऐसा क्यों नहीं किया? मुझे नहीं पता कि इसका उत्तर क्या है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि ऐसा इसलिए नहीं किया गया क्योंकि वह कमज़ोर और ताकतवर को एक साथ बढ़ने देना चाहते थे। यह एक तरह से ईश्वर है जो चीजों को बिना किसी जांच के उत्पत्ति 6 की दिशा में जाने की अनुमति दे रहा है। लेकिन कम से कम इस मामले में वह किसी को कैन से बदला लेने से रोकता है। कैन इस बात से डरता था, और इसलिये यहोवा कहता है, जो कोई कैन को मार डालेगा, उस से सातगुणा पलटा लिया जाएगा। इसमें उसके चेहरे पर कोई विशिष्ट निशान या किसी प्रकार की शारीरिक चीज़ शामिल नहीं होगी जो उसे अन्य लोगों से अलग करती हो। इसमें वह शामिल नहीं होगा। यह किस प्रकार का संकेत था कि यह प्रभु ने दिया था, हम नहीं जानते। परन्तु कुछ लोगों ने इसे इस प्रकार पढ़ा कि प्रभु ने कैन को किसी प्रकार का संकेत दिया ताकि कोई उसे पाकर मार न डाले। दूसरे शब्दों में, कि उसे मारा नहीं जाएगा। उसकी जान बची रहने वाली थी। उसकी सजा यह थी कि उसे भटकने के लिए मजबूर किया जाएगा, वह धरती पर खेती नहीं कर सकेगा। मैं सोचता हूं कि सात गुना के विचार का अर्थ है

परिपूर्णता, संपूर्णता का विचार। जो कोई भी कैन को मार डालेगा उससे यहोवा पूरा बदला लेगा। मुझे नहीं लगता कि ऐसा होगा कि कोई कैन को मार डालेगा, सात लोग मारे जायेंगे। मुझे नहीं लगता कि यह विचार है। मैं सोचता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति उस निषेध का उल्लंघन करेगा तो भगवान उससे पूर्ण प्रतिशोध लेंगे। मैं देख रहा हूँ कि हमारा समय पहले ही जा चुका है। यह तेजी से चला गया। ठीक है, हम 2 से शुरू करेंगे। अगले घंटे की शुरुआत में।

क्रिस्टन बीबे द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया